Programme-	**B.A.**
Course -	**History of Western Philosophy**
Course Code-	**PHLC-211**
Sem-	**III Sem.**
Year-	**2020-21**
Unit-	**1 (Part-1)**
Topic-	**Socrates, Plato, Aristotle**
Sub-Topic-	**Methods of Socrates, Introduction to Socrates, Introduction to Plato, theory of knowledge (Plato), Aristotles theory of causation, Form and Matter.**
Faculty-	**Dr. Soma Das**
E-mail-	**hod.ph@monad.edu.in**

Programme:- B.A.
Semester:- III , Year - 2020 - 21
Course Name:- History of Western Philosophy.
Course Code:- PHLC - 211
Topic:- Socrates (सुकरात की दार्शनिक पद्धति)
Unit:- 1

"हम प्रत्यक्ष रूप से उसके विपरीत आचरण नहीं कर सकते जो हम है —— किंतु इस समय ऐसा वातावरण चुनकर जो हमें चलने वाला है, वह वस्तु पसंद कर सकते है, जो हम बन जायेंगे। इस तरह हम इस अर्थ में स्वतंत्र है कि हम अपने मित्रों, पुस्तकों, धंधों तथा मनोरंजन की वस्तुओं का चयन कर स्वयं अपने चरित्र को ढालते है।" ——

ऊपर लिखित इन वाक्यों से शायद हम यह आकलन कर सकते है सुकरात किस व्यक्तित्व के धनी थे, ऐसे विमुग्ध करी सुकरात के लिये स्वाभाविक है के अनेक शिष्य होंगे। जिनमें से एक शिष्य जगत-प्रसिद्ध दार्शनिक बना, वह था प्लेटो जो अफलातून के नाम से भी जाना जाता है।

सुकरात का जन्म 470 ई. पू. में एथेन्स में हुआ था, पिता सोफोनिस्कस एक मूर्तिकार थे। अपने मंडल के प्रभावशाली व्यक्ति थे, वह मुख्यरूप से एक शिक्षक रहे है। उन्होंने जिस प्रभावी ढंग से लोगों में शिक्षा की विकास की उसे हम विशेषरूप से सुकरातीय पद्धति या सुकरात की दार्शनिक पद्धति के नाम से जाना जाता है।

उनकी विशेषता यह रही है कि जब भी वह किसी के साथ वार्तालाप करते थे उन्हें पूरा पूरा सुनते थे तथा अपने को अज्ञानी प्रदर्शित करते थे, फिर जहाँ पे उन्हें लगता था कि उन विचारों को ठीक करने की आवश्यकता है, उसे ठीक कर उन्हें नये

स्थापन के लिये प्रोत्साहित करते थे, जिससे की वह व्यक्ति सत्य के किसी निर्णय पर पहुँचे।

शिक्षा के इस पद्धति को लोगों ने सुकरातीय व्यंग (Socratic irony) नाम दिया, तथा इसे धात्री प्रणाली भी कहा जाता है, जिसप्रकार एक दाई माँ को बच्चा पैदा करने में सहायक होती है उसीप्रकार सुकरात व्यक्ति के आत्मा में छिपे हुये विचारों को सामने लाने में मदद करते थे, इसके पीछे कोई आडम्बर नहीं था बल्कि उनकी विनयशीलता रही है सत्य को उजागर करने के लिये। इसी प्रकार से और बहुत ऐसे उदाहरण मिलते हैं उनकी विनयशीलता को जो वास्तविक रूप से एक ज्ञानी दार्शनिक के रूप को प्रकटित करते हैं।

सुकरात पद्धति के विशेषतायें

सुकरात द्वारा दिये गये विचारों को उनके दार्शनिक पद्धति कहा जाता है, जिसके निम्नवत विशेषताएं हैं:—

(1) वाद-विवादात्मक

सुकरात की खास विशेषतायें यह थी कि वह lecture या व्याख्यान से शिक्षा नहीं देते थे बल्कि प्रश्नोत्तर या वाद विवाद करके एक सही नतीजे पर पहुँचने की कोशिश करते थे, इसलिये यह पद्धति वाद-विवाद के नाम से जाने जाते हैं।

(2) संदेहात्मक

सुकरात की शिक्षण पद्धति को संदेहात्मक कहा जाता है क्योंकि किसी भी वाद-विवाद में उलझने से पहले वह अपने पर संदेह करते थे, अपने को अज्ञानी कहते थे ताकि जिस विषय को जानने के लिये संदेह कारण बना, उस विषय की सत्य की खोज हो सके।

③ परिभाषात्मक अथवा प्रत्यात्मक

सुकरात सोफिस्टों के विरुद्ध ज्ञान को परिभाषाओं द्वारा प्राप्त प्रत्ययों से निर्मित ज्ञान कहते थे। यहाँ प्रत्यय का तात्पर्य है किसी वर्ग या जाति में अन्तर्निहित सामान्य गुण जो उसे दर्शाते हैं, सुकरात का मानना था ज्ञान की प्राप्ति के लिये प्रत्येक विषय या वस्तु का एक निश्चित परिभाषा (definition) होना चाहिये, जो उस वस्तु के अर्थ को स्पष्ट करते हैं।

④ आगमनात्मक

अनुभव ज्ञान प्राप्ति के लिये सर्वश्रेष्ठ माध्यम है, यह सुकरात का कहना था, हम अपने दैनिक जीवन में कुछ न कुछ अनुभव प्राप्त करते रहते हैं जो ज्ञान प्राप्ति का साधन है। अनुभव के आधार पर विभिन्न तथ्यों को परख करते हुये ही एक निश्चित सत्य पर पहुँचा जा सकता है जिसे हम आगमन कहते हैं, इसप्रकार तथ्य तथा अनुभव के आधार पर निष्कर्ष निकालना सुकरातीय पद्धति की विशेषता है।

⑤ निगमनात्मक

निगमन और आगमन एक दूसरे के पारिपूरक हैं, परंतु निगमन आगमन के विपरीत है। सुकरात का कहना था सत्य की खोज के लिये आगमन के साथ साथ निगमन भी आवश्यक है, क्योंकि आगमन के द्वारा दी गई परिभाषाओं को जब तक निगमन द्वारा परीक्षण नहीं किया जायेगा तो सत्यता में संदेह बनी रहेगी, संदेह का निराकरण के लिये निगमन भी आवश्यक है। इसप्रकार निगमन सुकरातीय पद्धति के एक विशेष रूप है।

निःसंदेह रूप से सुकरात की यह दार्शनिक पद्धति पाश्चात्य दर्शन को अत्यन्त प्रभावित किया था, क्योंकि सुकरात के अनुसार वास्तविक ज्ञान वही है जो "आत्मज्ञान" है, जिसके लिये किसी भी प्रकार की बाह्य आडम्बर की आवश्यकता नहीं है, बाद में दार्शनिक प्लेटो भी इन विचारों से प्रभावित हुये थे एवं उनके सम्पूर्ण दर्शन इसी आधार पर विराम है।

सोफिष्ट और सुकरात दोनों मानववादी थे परंतु दोनों की ज्ञानमीमांसा एक दूसरे से अलग रहा है, सोफिष्ट मानवी समस्या से इसलिये जुड़े थे कि युवक जो भविष्य के नागरिक बने वह सजग और चालाक बने, वहीं सुकरात का उद्देश्य था प्रत्येक युवक नैतिक शिक्षा को जाने और अपने जीवन में अपनायें,

सोफिष्ट कहते है इन्द्रिय प्रत्यक्ष ही ज्ञान है, सुकरात को इस मत से आपत्ति रहा है, उनका कहना था ज्ञान का कोई विशेष मापदंड नहीं होता है। क्योंकि जो कुछ हमें अच्छा लगता है केवल वही अच्छा है यह ज्ञान का मापदंड नहीं हो सकता है। इसलिये उनका मानना था ज्ञान प्रत्यय से निर्मित होते है,

अब एक प्रश्न उठ सकता है, प्रत्यय क्या है? जब इन्द्रिय की सहायता से हम किसी वस्तु विशेष का ज्ञान प्राप्त करते है उसे प्रत्यक्षीकरण कहते है, हमें इससे आगे भी जाना है और ज्ञान को समझना है, जब हम किसी वस्तु विशेष की कल्पना करते है, हम उसकी जाति या वर्ग की भी कल्पना अपने मस्तिष्क में रखते है, उस की या जाति का जो विचार हम करते है उसे 'प्रत्यय' कहते है। सुकरात का कहना है यह विचार या धारणा ज्ञान के लिये महत्वपूर्ण है,

Topic:- Introduction to Socrates (सुकरात का परिचय)

"जो दर्शन का अध्ययन नहीं करते और शरीर त्याग के समय पवित्र नहीं होते उन्हें देवताओं के साथ बैठने की आज्ञा नहीं होती है, केवल ज्ञान के प्रेमी ही दर्शन के संगीत का आनंद ले सकते हैं, इसलिये सच्चे दार्शनिक संयमी होते हैं तथा शरीर के सुखों से अपने को बचाते हैं।" — सुकरात, फीडो

सुकरात के व्यक्तित्व को समझना है तो प्लेटो द्वारा प्रतिपादित 'मीनो' नामक संवाद को समझना आवश्यक है, ऐथेंस के युवकगण सुकरात के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित थे, सुकरात का कहना था, यदि बात परिहास करने की हो तो मेरा विचार यह होगा न केवल आकृति में बल्कि उस व्यक्ति या विषयवस्तु की अर्थ को समझना आवश्यक है, जिसके लिये उन्होंने विद्युत और मछली का उदाहरण दिया है। ऐसे ही एक विचार 'सिम्पोजियम' में मिलते हैं जहाँ एल्किबियाडिज सुकरात की प्रशंसा करते हुये कहते हैं 'आप मुरलीवादक देव सिलेनस की भाँति हैं, बल्कि आप और भी अधिक आश्चर्यकारी मुरलीवादक हैं, वह तो अपने वाद्ययन्त्र से लोगों को खुश करते हैं, पर आप तो बिना वाद्ययंत्र के अपने शब्दों के द्वारा लोगों को मुग्ध कर रहे हो।"

सुकरात के कोई विशेष गुरु नहीं थे ऐसा ही निदर्शन मिलता है, क्योंकि उन्हें किसी विशेष स्थान में शिक्षा नहीं मिली, किंतु उनके ज्ञानी व्यक्ति से ~~उनके~~ वह रूबरू हुये थे जिसमें पार्मेनाइडिज, जेनो, प्रोटागोरास, प्राडिकस, आदि का नाम उल्लेखनीय है। इसप्रकार सुकरात बहुत ही कम उम्र में अनेक ज्ञानी व्यक्ति के सान्निध्य में आये थे, ऐसा माना जाता है लगभग 25 वर्ष के उम्र में उन्होंने लोगों का

ध्यान आकर्षित किया था,

ग्रीक दर्शन में सुकरात का स्थान प्रथम पंक्ति के दार्शनिकों में रखा गया है, किंतु सुकरात दार्शनिक से ज्यादा एक नीति- विचारक रहे हैं, वह अपने समस्त जीवन लोगों को नीति की शिक्षा देते रहे, क्योंकि उनके जीवन का एक ही मुख्य लक्ष्य था कि लोगों को सही मार्ग किस प्रकार बताया जाये, जिससे वह जीवन जीने के अर्थ को समझ सके, सुकरात के पूर्व समस्त दार्शनिक प्रकृति प्रेमी रहे हैं। सभी ने लगभग प्रकृति प्रेम को लेकर कोई न कोई पुस्तक लिखे हैं, सुकरात को पदार्थ विद्या तथा प्रकृति प्रेम से बहुत ज्यादा दिलचस्पी नहीं था बल्कि उनके लिये अधिक प्रिय था उनके विचार तत्व, तथा पीता जगता मनुष्य।

मुख्य रूप से देखा जाये तो सुकरात ज्ञान को अधिक महत्व देते थे, जिसकी वजह से वह ज्ञान को ही सद्गुण कह देते थे,

इतिहासकार जेनोफोन कहता था सुकरात का मृत्युदंड उसके लिये अन्याय था, क्योंकि सुकरात के मृत्यु से वह बहुत दुःखी थे, सुकरात को मृत्युदंड दिया गया था, 'एपोलजी' नामक ग्रंथ में इसका विस्तृत वर्णन किया गया है, सुकरात को युवकों को भड़काने के संदर्भ में दंड दिया गया था, परंतु अपने आत्मविश्वास के द्वारा उन्होंने जनसमूह को कहा, जो कार्य उन्होंने अपने देश के लिये किया, उनका फल राष्ट्रपति के हाल में होना चाहिये, क्योंकि वह निरपराधी हैं, अतः अपनी तरफ से वह कोई दंड नहीं चाहता है। सुकरात के इस कथन से क्रोधित न्यायाधीश उन्हें हेमलाक (जहर) पिलाकर मृत्युदंड देने की आदेश देते हैं।

Unit:- 1

Topic:- Introduction to plato (प्लेटो संबंधित परिचय)

"दार्शनिक जीवन ही एकमात्र ऐसा जीवन है जो राजनीतिक महत्वाकांक्षा के जीवन से श्रेष्ठ है और वही राज्य के शासन के लिये सबसे अच्छा आयोजन भी है।"

— प्लेटो, Republic

सुकरात के बाद यदि किसी दार्शनिक के बारे में विचार किया जाये तो वह निश्चितरूप से प्लेटो ही होंगे। क्योंकि पश्चिमी दर्शन के इतिहास में सुकरात के योग्य शिष्य के रूप में प्लेटो का ही नाम उभरकर आता है। सुकरात के प्रिय शिष्य या प्लेटो, आधुनिक काल के दर्शन में प्लेटो और अरस्तू सबसे प्रभावशाली दार्शनिक रहे हैं। प्रो० Whitehead का कहना है ~~प्लेटो के~~ प्लेटो के बाद दार्शनिक विचारों की उत्पत्ति ही नहीं हुई। उनके बाद का दर्शन केवलमात्र उनके कहे हुये बातों की टिप्पणीयां है, तथा उपसंहार है। महान कवि Wordsworth कहते है प्लेटो यूनान का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति है। मेकाले भी कहते है, प्लेटो से बड़ा बुद्धिमान पुरुष अब तक पैदा नहीं हुआ है।

प्लेटो का असली नाम 'एरिस्टोकलीज' था, प्लेटो नाम उनके चौड़े कंधे होने के कारण उनके शिक्षकों के द्वारा दी गई थी, ग्रीक भाषा में 'प्लेटो' शब्द चौड़े कंधे के लिये उपयोग किया जाता है। प्लेटो के पिता का नाम था अरिस्टोन जो कि एथेंस के अंतिम राजा कोड्रस के वंश के थे, तथा उनकी माता प्रसिद्ध विधिक परिवार से संबधित थे। पारिवारिक रूप से प्लेटो का साक्षात सुकरात से हुई और धीरे धीरे उनके अनन्य शिष्य बन गये। उनका कहना था कि यह मेरा सौभाग्य है कि मैं सुकरात के युग में पैदा हुआ हूँ।

सुकरात के प्रति प्लेटो की श्रद्धा उनके dialog (संवाद) से मिलती है। प्लेटो द्वारा दिया गया अधिकांश संवादों में प्रमुख वक्ता सुकरात ही रहा है। किंतु गुरु और शिष्य का सान्निध्य अधिक समय तक नहीं रहा, जैसा कि हम जानते हैं सुकरात को विषपान करना पड़ा था।

सुकरात के मृत्यु से प्लेटो इतना व्यथित हुये थे उससे उभरने के लिये विश्व भ्रमण में चले गये थे। ऐसा माना जाता है, विश्व भ्रमण के दौरान उन्होंने अनेक विद्वानों के सम्पर्क में आये, जिसमें पारमेनाइडिज और इटली में पाइथागोरास का नाम विशेषरूप से सराहनीय है। वहाँ से वापस आने के बाद शिक्षा कार्य को सुचारुरूप से व्यवस्थित करने के लिये उन्होंने 'अकादमी' नामक संस्था की स्थापना की। उनके शिष्य मुख्यरूप से राजनीति का अध्ययन करने के लिये आते थे। प्लेटो अपने शिष्य को वैज्ञानिक ढंग से शिक्षा देते थे।

परमाणुवादी बहुतत्ववादियों के विचार से प्लेटो सहमत थे कि सत् एक नहीं बल्कि अनेक है। प्लेटो भी अनेक प्रत्ययों को सच्चा मानते हैं। ऐनेक्सागोरास के इस मत से प्लेटो अत्यन्त प्रभावित थे कि विश्व का मौलिक तत्व एक बौद्धिक तत्व (nous) है।

प्लेटो द्वारा लिखी गई ग्रंथ की संख्या के सम्बन्ध में कोई निश्चित मत नहीं मिलता है, फिर भी यह पाया गया है कि उन्होंने 35 संवाद, 13 पत्र (letters) और परिभाषाओं का संग्रह उनके कृति में है। Dialogs of Plato विश्व के लिये अमूल्य धरोहर है।

— o —

Unit - 1

Topic -; Theory of Knowledge (Plato) (प्लेटो की ज्ञानमीमांसा)

प्लेटो की विशेष कृतियों को हम देखे तो पायेंगे कि उन्होंने कथानकों, रूपक और मिथकों के माध्यम से संवाद के रूप में अपने विचार प्रस्तुत किये थे। प्लेटो के विचार को तिन वर्गों में बांटा जाता है। - ① ज्ञानमीमांसा संबंधी विचार
② तत्वमीमांसा संबंधी विचार
③ नीति एवं राजनीति संबंधी विचार।

प्रस्तुत पर्व में हम ज्ञानमीमांसीय विचार पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। प्लेटो के दर्शन में ज्ञानमीमांसा बहुत महत्वपूर्ण है। उनका कहना था उत्तम जीवन जीने के लिये सबसे आवश्यक है राज्य सुगठित हो। क्योंकि राज्य सुगठित नहीं होगा तो व्यक्ति के लिये उत्तम जीवन की कल्पना व्यर्थ है, जैसा कि हम जानते है सोफिस्टों का कहना था 'ज्ञान प्रत्यक्षीकरण है,' उसका खंडन करना आवश्यक था, जिसका शुरुआत सुकरात कर चुके थे, प्लेटो ने 'थियाटिटास' संवाद में इसी प्रश्न को उठाया ज्ञान क्या है? थियाटिटास एक प्रख्यात गणितज्ञ तथा अकादमी के प्रतिष्ठित सदस्य थे, इस संदर्भ में प्लेटो नकारात्मक रूप से इस मत का खंडन करते हुये बढ़ते है, सबसे पहले हम यह देखेंगे ज्ञान क्या नहीं है। और इसे समझने के लिये उन्होंने सर्वप्रथम ज्ञान प्रत्यक्षीकरण है तथा ज्ञान मत है इन विचारों का खंडन करते है।

'ज्ञान प्रत्यक्षीकरण है'-का खंडन

ज्ञान केवलमात्र इन्द्रिय के द्वारा प्राप्त प्रत्यक्षीकरण है - इस बात के खंडन के लिये निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत करते है -

① भविष्य के कथनों की सत्यता न होना :-

जैसे कि साक्षियों का मानना है जो हमें सत्य प्रतीत होता है, वही सत्य है, प्लेटो का कहना है कोई बात प्रतीत होने से ही सत्य नहीं हो जाता है, भविष्य के कथनों की असत्यता इस मत को गलत सिद्ध करती है, कोई व्यक्ति यदि यह कहे या सोचे वह देश के राष्ट्रपति बन जायें, तो आवश्यक नहीं है कि वह राष्ट्रपति बन जायें, इसप्रकार से अभिमत ज्ञान प्रत्यक्षीकरण है, इसे गलत सिद्ध करते हैं,

② शिक्षा एवं वाद-विवाद व्यर्थ :-

यदि प्रत्यक्ष ज्ञान ही एकमात्र सत्य ज्ञान है तब तो प्रत्येक प्रकार की शिक्षा एवं वाद-विवाद व्यर्थ है, प्रत्यक्ष तो कोई भी कर सकता है, फिर तो उन्हें शिक्षा देने की आवश्यकता ही नहीं है, ठीक उसीप्रकार यदि प्रत्यक्ष ही एकमात्र सत्य है, तो वाद-विवाद की भी कोई आवश्यकता नहीं है,

③ विरोधी गुणों की उत्पत्ति :-

प्रत्यक्ष कई बार विरोध परिणाम भी देता है, जैसे- एक ही वस्तु सूर्य के प्रकाश में जिस रंग की दिखाई देती है, चन्द्रमा के प्रकाश में अलग रंग में नजर आती है। इसीप्रकार किसी लकड़ी के छड़ि को पानी में रखने से तीरछा प्रतीत होता है, जबकि वास्तव में वह सीधा है, इसप्रकार से देखा जाये तो यदि हम सिर्फ प्रत्यक्ष को ही ज्ञान मानते हैं तो अलग अलग समय पर इसके रंग, रूप आकार असामान्य को प्रतीत होता है,

④ मनुष्य एवं पशु के ज्ञान में अंतर :-

यदि प्रत्यक्ष ज्ञान है, तो ज्ञान में भी अंतर नहीं होना चाहिये, क्योंकि पशु भी मनुष्य के जैसे ही विषय और वस्तु को प्रत्यक्ष करते हैं, [illegible]

(5) आत्मघाती सिद्धांत:-

सोफिष्टों का कहना है जो व्यक्ति को सत्य लगे वह सत्य है, और जो असत्य प्रतीत होता है, वह असत्य है। इस पर प्लेटो का कहना था मुझे तो सोफिष्ट का सिद्धांत असत्य प्रतीत होता है, ऐसी अवस्था में सोफिष्ट जो कहते हैं ज्ञान के संदर्भ में वह अपने आप आत्मघाती बन जाते हैं।

(6) सत्य का वस्तुगत मापदंड:-

सोफिष्टों का विचार सत्य और असत्य के वस्तुगत मापदंड को समाप्त कर देती है। कोई भी विषय या वस्तु जो हमें सत्य प्रतीत होती है वह और किसी के लिये असत्य हो सकता है, और ऐसी स्थिति में उस वस्तु की सत्यता या असत्यता नष्ट हो जाती है। इससे वस्तु के मूल्य पर आघात पहुँचता है।

(7) केवल इन्द्रिय-प्रत्यक्ष ही ज्ञान का मापदंड नहीं है:-

प्लेटो का कहना है यदि हमें यह लगे कि जिस वस्तु को हम देखते हैं, उसी का ज्ञान हमें हो जाता है, तो यह गलत है। इस प्रकार का प्रत्यक्ष केवल इन्द्रिय प्रत्यक्ष नहीं होता है। जैसे- एक कागज के टुकड़े को देखकर सिर्फ यह कहना कि यह सफेद है, उचित नहीं है, क्योंकि इसमें हमें अन्य मानसिक क्रियाओं का भी मांग रहता है। जब हम सुचारु रूप से बुद्धि का प्रयोग करते हुये इसे अन्य प्रकार के टुकड़ों से तुलना कर यह आधार पाते हैं कि यह वाकई कागज का टुकड़ा है, लकड़ी या कपड़े का टुकड़ा नहीं है। ठीक उसी प्रकार जब इसकी तुलना रंगों से करते हैं, तो बाकी सारे रंगों से इसका विरोध स्थापित कर, बुद्धि की सहायता से यह

(8) स्मृति भी ज्ञान है:-

प्लेटो का कहना था ज्ञान का अर्थ केवल प्रत्यक्षीकरण नहीं है, ज्ञान स्मृति से भी अर्जित की जा सकती है,

(9) परिणामवाद की कठिनाई:-

हेराक्लाइटस का परिणामवाद भी ज्ञान को असंभव बना देती है। यदि किसी वस्तु में बार बार परिवर्तन हो रहा है, तब उस वस्तु का कोई विशेष नाम नहीं दिया जा सकता है। क्योंकि प्रत्येक क्षण उसकी स्थिति बदलती जाती है, ऐसी स्थिति में उस वस्तु का प्रत्यक्ष ही नहीं किया जा सकता है, क्योंकि जब तक वह संवेदना का विषय बनी रहेगी, तब तक प्रत्यक्ष करते करते वह दूसरी बन जायगी,

इस प्रकार ऊपर लिखित तर्कों के द्वारा प्लेटो यह समझाने का प्रयास करते है कि ज्ञान केवल प्रत्यक्षजन्य नहीं है। उन्होंने प्रत्यक्ष की उपेक्षा नहीं की है, परंतु केवल प्रत्यक्ष ही ज्ञान का माध्यम है यह सही नहीं है, ज्ञान अर्जित करने के लिये बुद्धि की भी आवश्यकता है,

ठीक उसी प्रकार ज्ञान और मत में अंतर दर्शाते हुये प्लेटो कहते है मत वह है जो विचार प्रकट करने की भावना है। जैसे- सही मत और गलत मत, सही मत भी ज्ञान नहीं हो सकता, क्योंकि बिना कारण बताये मत प्रगट किये जाते है जो व्यक्ति के विश्वासों पर आधारित होता है, 'आगामी चुनाव में फलाने की सरकार बनेगी' - यह सच हो भी सकता है, नहीं भी हो सकता है, इसलिये ज्ञान वही है जो तर्कसंगत हो,

Unit - 1

Topic:- Aristotle's Theory of causation.

अरस्तू द्वारा कारणता का सिद्धांत :-

प्लेटो तत्वज्ञानी थे, जबकि अरस्तू मूलरूप से वैज्ञानिक रहे हैं, प्लेटो को शिक्षा प्राप्त करने के लिये गणित का ज्ञान देना आवश्यक था, परंतु अरस्तू की पाठशाला प्राकृतिक विज्ञान और प्राणीशास्त्र पर आधारित है, बर्नेट लिखते हैं, अरस्तू को यह शिकायत थी कि उसके समय के लोगों ने गणित के द्वारा दर्शन को प्रतिस्थापित कर दिया है। अरस्तू की वैज्ञानिक आंखें सत्य के खोज में व्यस्त रहती थी, वहीं प्लेटो 'शुभ' के प्रत्यय के खोज में रहते थे,

एथेंस से लगभग 100 मील दूर उत्तर में मेसीडोनिया के 'स्टेगिरी' नाम के शहर में अरस्तू का जन्म हुआ था, प्लेटो के समान बहुत ऐश्वर्यशाली परिवार में तो उनका जन्म नहीं हुआ था, किंतु उनके पिता प्रतिष्ठाशाली व्यक्ति थे, तथा पारिवारिक वातावरण चिकित्सक तथा वैज्ञानिकों से रहा है, जिससे यह प्रतीत होता है कि उनका बौद्धिक विकास वैज्ञानिक वातावरण में ही हुआ है।

प्लेटो ने प्रत्ययों को दिक्कालातीत कहा है, जबकि अरस्तू प्रदत्त विभिन्न आलोचनाओं से यह प्राप्त होता है कि प्रत्यय को किसी विशेष स्थान पर रखते हैं। प्लेटो द्वारा प्रत्ययों को 'परे' कहने का तात्पर्य केवल इतना था कि प्रत्येक वस्तु जगत् पर आश्रित न होकर स्वतंत्र सत्ता रखता है।

प्लेटो के मत की समीक्षा करते हुये अरस्तू कहते हैं गतिहीन प्रत्ययों का कारण गतियुक्त वस्तु नहीं हो सकता है। अरस्तू के लिये गति अत्यंत महत्वपूर्ण थी, वह कहते थे कि प्रत्येक प्रकार

की गति जिसमें परिवर्तन, उत्पत्ति, नाश, वृद्धि आदि संबद्ध है वह किसी न किसी उद्देश्य के आधार पर होता है। इसी प्रकार प्रत्येक घटना का कोई न कोई कारण होता है। अरस्तू कहते हैं प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई कारण होता है। इसे विश्लेषण करते हुये चार प्रकार कारण की बात करते हैं -

① उपादान कारण (material cause)
② निमित्त कारण (Efficient cause)
③ स्वरूप कारण (Formal cause)
④ लक्ष्य कारण (Final cause)

अरस्तू एक पीतल के मूर्ति की उदाहरण से इन चारों कारणों को समझाते हैं, जैसे -

① पीतल - उपादान कारण
② मूर्तिकार - निमित्त कारण
③ मूर्ति का काल्पनिक रेखाचित्र जो मूर्तिकार के दिमाग में था - स्वरूप कारण
④ तैयार मूर्ति - लक्ष्य कारण।

<u>उपादान कारण</u>:- किसी कार्य का उपादान कारण वह है जिससे वह कार्य बना है। जिस प्रकार किसी भी वस्तु को बनाने के लिये जो उसके कच्चा माल या raw material होते हैं, वह है उस कार्य का उपादान कारण।

<u>निमित्त कारण</u>:- निमित्त कारण कार्य की गति का कारण होता है। अर्थात कार्य के निर्माण में जिस गति या परिवर्तन की आवश्यकता होती है उसे लाने वाला निमित्त कारण होता है। मूर्ति के उदाहरण में मूर्तिकार और मूर्ति बनाने के लिये प्रयुक्त औजार निमित्त कारण है।

(3) स्वरूप कारण:

स्वरूप कारण कार्य का वह आकार है जो कार्य के निर्माण के पूर्व निर्माता के दिमाग में रहता है, जिसे हम प्रत्यय कहते हैं, इस प्रकार मूर्तिकार विशेष प्रकार की मूर्ति का निर्माण करता है।

(4) लक्ष्य कारण:-

लक्ष्य कारण वह कारण है जो किसी उद्देश्य या प्रयोजन कि सिद्धि के लिये होता है। जैसे - पीतल के मूर्ति के निर्माण में पूर्ण रूप से बनी हुई मूर्ति लक्ष्य कारण है।

इस संदर्भ में निम्नलिखित प्रश्न उपस्थापित किया जा सकता है, जिससे यह कारण सामने आये -

क) कार्य का निर्माण किससे हुआ है? (उपादान कारण)
ख) किसने यह निर्माण किया है (निमित्त कारण)
ग) यह कार्य क्या है (स्वरूप कारण)
घ) किस लक्ष्य के लिये यह किया गया है? (लक्ष्य कारण)

अरस्तू का कहना है, प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई कारण होता है। उनका कहना है प्राकृतिक घटनाओं में भी ये चारों उपस्थित रहते हैं, - चाहे वह किसी के जन्म से हो, किसी वस्तु के निर्माण से हो या किसी भी मानवीय प्रयोजन से हो, क्योंकि प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई उद्देश्य होता है। एक मानवीय वैज्ञानिक होने के नाते उन्होंने इस संसार में चलायमान हर कार्य के कारण के रूप में यही कारणता सिद्धांत की बात करते हैं।

— o —

Unit - 1

Topic :- 'Form and matter' by Aristotle.

(आकार एवं सामग्री :- अरस्तू के अनुसार)

आकार एवं सामग्री अरस्तू के अनुसार प्रत्येक द्रव्य का आवश्यक अंग है। यदि किसी भी वस्तु का विश्लेषण किया जाये तो उसमें निश्चित रूप से दो रूप होते हैं। पहला पदार्थ और दूसरा उसका विशेष आकार। क्योंकि पदार्थ और आकार साथ साथ रहते हैं। जैसे - किसी चमड़े की बैग की बात करें तो चमड़ा उस बैग का पदार्थ है और बैग एक सम्पूर्ण आकार है, जो हमें उसके व्यवहार में सहायता करते हैं।

ठीक उसीप्रकार अरस्तू 'द्रव्य' के दो रूप की बात करते हैं, जैसे - ① सामग्री ② आकार, जिसे हम पदार्थ एवं आकार कहते हैं अरस्तू के सामग्री और आकार उससे भिन्न नहीं है, जैसे की हम जानते हैं हर बुद्धिजीवी की अपना अलग अलग नजरिये होते हैं, इसलिये कुछ समानता के साथ भिन्नता भी होती है।

अरस्तू द्वारा विश्लेषित सामग्री एवं आकार की पहला विशेषता उनका अलग अलग स्वरूप न होना, अरस्तू जिसे आकार कहते हैं, प्लेटो के अनुसार वह सामान्य है,

अरस्तू प्रदत्त कारणता सिद्धांत के अनुसार उपादान कारण द्रव्य की सामग्री है और स्वरूप कारण उसका आकार है, इसप्रकार सामग्री वह है जिससे कोई वस्तु बनी है। तथा आकार वह है जिसमें सामग्री परिवर्तित होती है।

अरस्तू का कहना था, आकार में वस्तु की आकृति के अतिरिक्त विन्यास, उद्देश्य, कार्य, व्यापार आदि आते हैं। जैसे- यदि एक टेबिल की बात की जाये तो लकड़ी या लोहा हुआ उसकी सामग्री, टेबिल तीन पाया है या चौ पाया, वह हुआ उसका आकार, इसके अलावा अन्य उद्देश्य उनके आकार में ही आयेंगे, इसप्रकार किसी भी वस्तु का आकार, आकृति से अधिक विशेष होते हैं,

अरस्तू के सामग्री एवं आकार की अन्य विशेषता जो हम सामान्य पदार्थ और आकृति में नहीं देखते हैं, अभीत आवश्यक नहीं है आकार एवं सामग्री हमेशा आकार एवं सामग्री ही बनी रहे, आकार सामग्री बन सकती है और सामग्री आकार। यह बात किसी को भी अद्भुत लग सकता है, क्योंकि यदि सामग्री की बात करे तो सिमेन्ट बाल्तु बन सकता है; और आकृति में गोल, चौकड़ बन सकता है, यह तो संभव है, परंतु सामग्री आकृति में कैसे बन सकता है, इसके लिये अरस्तू का कहना है लकड़ी टेबिल का सामग्री है, परंतु यदि वृक्ष की बात करे तो वह आकार बन जाती है, ठीक उसी प्रकार सोने को खींचकर जब उसका तार बनाया जायगा वह उसका आकार होगा, परंतु जब उसी तार से गहना बनाया जायगा तो वह उसके सामग्री बन जायेंगे, इसप्रकार आकार एवं सामग्री सापेक्ष है,

संदर्भ:- stumph, Secrets to satra.
stace, Greek philosophy.
डा. शेखावत/पाश्चात्य दर्शन के ऐतिहासिक विश्लेषण